उद्घाटन • जेएनवीयू के कला, शिक्षा व समाज विज्ञान संकाय में आदिवासी अध्ययन केंद्र शुरू

जल, जंगल व जमीन आदिवासियों की धरोहर: प्रो. त्रिवेदी

एजुकेशन रिपोर्टर | जोधपुर

जेएनवीयू कुलपति प्रो. प्रवीणचंद्र त्रिवेदी ने कहा कि जल, जंगल और जमीन आदिवासियों की धरोहर है। राजस्थान के आदिवासियों पर शोध करने की आवश्यकता है। वे शुक्रवार को जेएनवीयू कला, शिक्षा व समाज विज्ञान संकाय में आदिवासी अध्ययन केंद्र का उद्घाटन कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यह केंद्र बहुआयामी कार्य करे और विवि को नई पहचान मिले, इसके लिए पांडुलिपियों का संग्रहण कर तथ्यों का पता लगाएं।

आरंभ में सरस्वती और बिरसा मुंडा की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित किया गया। केंद्र निदेशक डॉ. जनकसिंह मीना ने कहा कि बिरसा मुंडा, रानी गाइदिन्ल्यू, वीर नारायण सिंह, झलकारी बाई, टंट्या भील, रीतारमण राजू, रामजी, फूलो, तिलका मांझी आदि का अध्ययन करना जरूरी है। केंद्र की भविष्य की योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि यह केंद्र अंतर अनुशासनात्मक उपागम पर आधारित होगा। शीघ्र ही प्रमाण पत्र और पीजी डिप्लोमा पाठ्यक्रम तैयार किए जाएंगे। केंद्र देश में संसाधन एवं नीति केंद्र के रूप में कार्य करेगा। पुस्तकालय की स्थापना, एमओयू, पुरस्कार और सम्मान योजनाएं बनाई जाएंगी। शीघ्र ही एक शोध पत्रिका शुरू की जाएगी।

केंद्र के विभिन्न आयामों के बारे में बताया

संकाय अधिष्ठाता प्रो. केएल रैगर ने केंद्र के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला। राजनीति विज्ञान की विभागाध्यक्ष प्रो. कांता कटारिया ने आभार जताया। डॉ. निधि संदल ने संचालन किया। इस अवसर पर पूर्व संकाय अधिष्ठाता प्रो. केएन उपाध्याय, प्रो. एसपी दुबे, प्रो. पीके शर्मा, प्रो. एसके मीना, प्रो. एके गर्ग, प्रो. सरोज कौशल, प्रो. मीना बरडिया, प्रो. एसएल मीना, प्रो. यादराम मीना, प्रो. केए गोयल, डॉ. महिपाल सिंह राठौड़, प्रो. पीएम मीना, सुशीला शक्तावत, विनोद मैना, विनीत गुप्ता, डॉ. ज्योति गोस्वामी, डॉ. मीनाक्षी बोराणा, छोटेलाल, राकेश, लेखराज, हरिसिंह, प्रहलाद सिंह, माया मीना, अनिल, सवाई सिंह, डॉ. शीतल प्रसाद, डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. बबली, डॉ. रकमकेश आदि मौजूद थे।

साहित्य समाज का पथ प्रदर्शक

डॉ. जनक सिंह मीना

साहित्य समाज का ना केवल दर्पण होता है अपितु पथ प्रदर्शक भी होता है। इसी प्रकार साहित्यकार को किसी क्षेत्र विशेष या सीमा में जकड़ना उसके साथ न्यायोचित नही है, क्योंकि इसकी संकल्पना अत्यंत व्यापक एवं समग्र है। अक्सर यह कहा जाता है कि साहित्य एवं साहित्यकार का अपना दायरा होता है और इसे अलग-अलग भागों मे बांटना उचित नही है।

साहित्य विधाएं हो सकती है और उसके विविध स्वरूप हो सकते है परंतु इसका तात्पर्य यह नही है कि उसका विभाजन हो रहा है अपितु यह साहित्य के विकास का द्योतक है, जैसे स्त्री, दलित, आदिवासी, सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, धार्मिक, बहुजन विमर्श आदि। इनका अस्तित्व उस क्षेत्र विशेष मे नवीन साहित्य सृजन, चिंतन, मंथन, लेखन एवं नवीन सिद्धांतो के निर्माण से ही संभव होता है। जब जब दलित-आदिवासी एवं वंचित विमर्श की बात होती है तो इसे अनायास ही कौतूहल का विषय बना दिया जाता है और आलोचनाओं का दौर शुरू हो जाता है। राजस्थान के परिपेक्ष्य में देखते है तो अनेक दलित एवं दलितेतर साहित्यकारो ने अपनी कलम की लेखनी चलाई है। परंतु यहां द्वंद पैदा हो जाता है कि दलित-आदिवासी विषयों पर लिखने वाला साहित्यकार कौन है ? वह किस जाति का है ? उसकी क्या विचारधारा है ? ऐसे अनेक प्रश्न हमारे समक्ष खड़े हो जाते है और निराधार एवं अतार्किक बहस चल पड़ती है। इसके पीछे का जो यथार्थ है कि दलित अपने जीवन मे ऐसे कटु अनुभव और परिस्थितियो से गुजरता है कि जब कोई दलितेतर साहित्यकार दलित-आदिवासी से संबंधित मुद्दों पर बात करता है तो उसमें वह कटु अनुभव शामिल नहीं हो पाता है जो कि उससे संबंधित समाज के साहित्यकारों को अपने जीवन के प्रत्येक पड़ाव पर होता है। जोधपुर में साहित्य लेखन की दिशा में वैसे तो लंबे अरसे से सतत प्रयास होते रहे है परंतु दलित, दमित, आदिवासी, महिला एवं वंचित वर्ग पर केंद्रित लेखन का इतिहास ज्यादा पुराना नहीं है। प्रारंभिक दौर के साहित्यकारों में जोधपुर मे जन्मे प्रोफेसर श्यामलाल जेदिया की एक भंगी कुलपति की अनकही कहानी, ट्राइबल लीडरशिप कृतियां चर्चित रही है। रूपचंद चावरिया द्वारा रचित दलित पुकार, पथ के रोड़े कविता संग्रह के रूप मे दलित वेदना को इंगित करते हैं। चंदनमल नवल ने रेगर जाति का इतिहास, शहीद राजाराम मेघवाल, दलित वीर वीरांगनाएं जैसी पुस्तकों से दलित साहित्य की वास्तविकता को उकेरा है। इसके अंतर्गत मोहनलाल जोड़, विमला आर्य, हरीश चंद्र कर्दम, एलआर जोधा, देवीलाल भील आदि हैं। वर्तमान दौर के साहित्यकारों मे डॉ. बाबूलाल चावरिया की दलित आंदोलन के प्रेरणा प्रतीक, सात समुद्र पार इंग्लैंड यात्रा यात्रा संस्मरण, वेदना के स्वर कविता संग्रह के जाने-माने हस्ताक्षर है। तारा राम ने धम्मपद गाथा और कथा, बौद्ध धर्म का मूल तत्व जैसी रचनाओं द्वारा धार्मिक यथार्थ को दृष्टिपटल पर लाने का प्रयास किया है। प्रोफेसर किशोरीलाल रेगर की साहित्य के प्रतिरोधी स्वर पुस्तक तथा दलित एवं स्त्री विमर्श पर अपने निर्देशन में शोध कार्य करवाया है। राजन निर्मोही का राजस्थान के दलित साहित्यकार, दलित विमर्श परिपेक्ष में संवाद महत्वपूर्ण रचनाएं हैं। इस श्रेणी में प्रोफेसर अरविंद परिहार, प्रोफेसर कांता कटारिया, गुलाबचंद बारास्ता, डॉ. प्रेम कुमार नवाल है। युवा साहित्यकारों मे डॉ. जनक सिंह मीना सामाजिक साहित्य जनचेतना की शोध पत्रिका अरावली उद्घोष के संपादक के रूप में दलित, दमित, आदिवासी एवं वंचित वर्ग की निरंतर आवाज उठा रहे हैं तथा आदिवासी वेदना उभरते प्रश्न, भारत की आदिवासी जनजातियां-चुनौतियां एवं संभावनाएं नामक पुस्तक व वंचित तबके की अवहेलना नामक आलेख के माध्यम से उनकी मूल समस्याओं की ओर इशारा किया है।

लेखक आदिवासी अध्ययन केंद्र, जेएनवीयू जोधपुर में निदेशक हैं।

देश के लिए समर्पित एवं त्याग की मूर्ति थे डॉ. जयपाल सिंह मुंडा-डॉ . जनक सिंह मीना

स्मार्ट हलचल । राकेश मीणा

जयपुर। डॉ . जयपाल सिंह मुंडा का जन्म 3 जनवरी 1903 को खूंटी के टकरा पाहनटोली में हुआ था हु इनके पिता का नाम अमरू पाहन तथा माता का नाम राधामणि था हु इनके बचपन का नाम प्रमोद पाहन था हु झारखंड के खूंटी के पाहन टोली स्थित खपड़ा व मिट्टी के बने जिस घर में जयपाल सिंह मुंडा का जन्म हुआ था , जो आज देखरेख के अभाव में ढह चुका है हु इससे स्पष्टता चलता है कि जयपाल सिंह मुंडा का जन्म एक गरीब आदिवासी परिवार में हुआ था हु आदिवासी समाज में उन्हें मरङ गोमके उपनाम से लोकप्रियता हासिल थी हु इनकी प्राथमिक शिक्षा पैतृक गांव में ही हुई तथा ईसाई धर्म स्वीकार करने के कारण उन्हें वर्ष 1910 में रांची के चर्च रोड स्थित एसपीजी मिशन द्वारा स्थापित संत पॉल हाई स्कूल में प्रवेश मिला और यहीं से 1919 में प्रथम श्रेणी में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की हु जयपाल सिंह मुंडा कुशाग्र बुद्धि एवं विलक्षण प्रतिभा के धनी थे हु उन्होंने डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि इंग्लैंड के ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से प्राप्त की हु वे न केवल पढ़ाई में अव्वल थे अपितु खेलों के शौकीन और अदम्य प्रतिभा के धनी थे हु डॉ . जयपाल सिंह मुंडा 03.01.1903-20.03. 1970 इंग्लैंड में वर्ष 1925 में ऑक्सफोर्ड ब्लू का खिताब पाने वाले जयपाल सिंह मुंडा हॉकी के एकमात्र अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी थे हु मुंडा का चयन वर्ष 1927 में भारतीय सिविल सेवा के लिए हो गया था और सिविल सेवा में चयनित होने वाले वे पहले भारतीय और पहले आदिवासी थे

मुंडा वे हॉकी मे भारत का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नेतृत्व कर रहे थे अतः 1928 में सिविल सेवा से त्यागपत्र देकर भारतीय हॉकी टीम की कमानी संभाली और 1928 के ओलंपिक खेलों में देश को पहला स्वर्ण पदक दिलाया हु इससे साफ जाहिर है कि उन्होंने देश हित मे स्वहित को त्याग कर राष्ट्रहित को गले लगाया था हु अतः इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि वे महान त्यागी , समर्पित एवं राष्ट्र निर्माता थे।

डॉ .मुंडा ने कई जगहों पर नौकरी की तथा बीकानेर के राजा की नौकरी छोड़ने के बाद वर्ष 1938 में झारखंड में आदिवासी महासभा से जुड़े और उसकी अध्यक्षता करने का अवसर मिला हु उनका मानना था कि कलम की ताकत तलवार से ज्यादा होती है और इसी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने हिंदी , अंग्रेजी व मुंडारी भाषा में आदिवासी सकम नामक साप्ताहिक समाचार पत्र का प्रकाशन भी प्रारंभ किया था हु1946 में डॉ . मुंडा संविधान सभा के सदस्य बने हु उनके अंदर साहस , नेतृत्व क्षमता , जुझारूपन , त्याग , समर्पण एवं सेवा की भावना कूट - कूट कर भरी हुई थी । उन्होंने कई आंदोलन किए और आंदोलनों का नेतृत्व करते हुए अदम्य साहस का परिचय दिया हु उन्होंने आदिवासी महासभा के माध्यम से अलग राज्य की परिकल्पना को राजनीतिक स्वरूप देते हुए 1950 में झारखंड पार्टी अस्तित्व में आई हु इसी के फलस्वरूप 1951 में देश में जब लोकतांत्रिक सरकार का गठन हुआ तो बिहार के छोटानागपुर क्षेत्र में झारखंड पार्टी एक सशक्त राजनीतिक पार्टी के रूप मे विकसित हुई हु देश में 1952 के पहले आम चुनावों में छोटा नागपुर व संथाल परगना को मिलाकर 32 सीटें आदिवासियों के लिए आरक्षित की गई थी और इन सभी 32 सीटों पर झारखंड पार्टी ने जीत का परचम लहराया हु लोकसभा चुनाव में डॉ . मुंडा सांसद चुने गए और अन्य 4 सीटों पर भी उनकी पार्टी के उम्मीदवार सांसद चुने गए हु1955 में जयपाल सिंह मुंडा ने राज्य पुनर्गठन आयोग के समक्ष झारखंड को अलग राज्य बनाने की मांग रखी हु डॉ . मुंडा 1952 से 1967 तक 4 बार लगातार सांसद रहे तथा उन्हें अत्यंत कम समय के लिए उपमुख्यमंत्री के रूप में काम करने का भी अवसर मिला हु डॉ . जयपाल सिंह मुंडा ने संविधान सभा में 19 दिसंबर 1946 को अपने उद्बोधन में कहा था कि स्वतंत्र लेखन , सामाजिक कार्यकर्ता आदिवासी इस देश का प्रथम नागरिक है हु मैं उन लाखों अज्ञात लोगों की ओर से बोलने के लिए यहां खड़ा हुआ हूं जो सबसे महत्वपूर्ण हैं , जो आजादी के अंजान लड़ाके हैं , जो भारत के मूल निवासी हैं जिनको बैकवर्ड ट्राइब्स , प्रिमिटिव ट्राइब्स , क्रिमिनल ट्राइब्स और जाने क्या - क्या कहा जाता है , पर मुझे अपने जंगली होने पर गर्व है क्योंकि यह वही संबोधन है जिसके द्वारा हम लोग इस देश में जाने जाते हैं हु जयपाल सिंह मुंडा ने संविधान सभा मे कहा था कि आदिवासी को केवल आदिवासी कहा जाए और लिखा जाए परंतु यह दुर्भाग्य है कि आज तक किसी भी सरकार ने इसे गंभीरता से नही लिया जबकि उन्होंने कहा था कि आदिवासियों 2 को जनजाति कहना आदिवासियों का अपमान है।

डॉ . मुंडा ने आदिवासियों के लिए कोई अलग देश या राष्ट्र बनाने की मांग कभी नहीं रखी बल्कि उन्होंने देश के अंदर आदिवासियों के लिए एक अलग व्यवस्था की मांग रखी हु जेम्स हेरेंज के अनुसार मुंडा ने संविधान सभा में बहस करते हुए नसीहत दी थी कि आप लोग आदिवासियों लोकतंत्र नहीं सिखा सकते , बल्कि समानता और सह अस्तित्व उनसे ही सीखना होगा हु आज जब देश की सत्ता पार्टी मे है 37.4 प्रतिशत मत पाकर शासन चला रही है , कारपोरेट घराने विकास के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों को बेतहाशा नष्ट कर रहे है , तब आज के आदिवासियों का दायित्व है कि अपने बहु प्रतिभा के धनी जयपाल सिंह मुंडा द्वारा प्रारंभ किए गए लोकतंत्र समानता और सह अस्तित्व जैसे मानवीय मूल्यों को आगे को जनजाति कहना आदिवासियों का अपमान है हु डॉ . मुंडा ने आदिवासियों के लिए कोई अलग देश या राष्ट्र बनाने की मांग कभी नही रखी बल्कि उन्होंने देश के अंदर आदिवासियों के लिए एक अलग व्यवस्था की मांग रखी हु जेम्स हेरेंज के अनुसार मुंडा ने संविधान सभा में बहस करते हुए नसीहत दी थी कि आप लोग आदिवासियों को लोकतंत्र नहीं सिखा सकते , बल्कि समानता और सह अस्तित्व उनसे ही सीखना होगा हु आज जब देश की सत्ता पार्टी में है 374 प्रतिशत मत पाकर शासन चला रही है , कारपोरेट घराने विकास के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों को बेतहाशा नष्ट कर रहे हैं , तब आज के आदिवासियों का दायित्व है कि अपने बहु प्रतिभा के धनी जयपाल सिंह मुंडा द्वारा प्रारंभ किए गए लोकतंत्र , समानता और सह अस्तित्व जैसे मानवीय मूल्यों को आगे बढ़ाएं हु डॉ . जयपाल सिंह मुंडा ने देश के आदिवासियों को अपने ओतप्रोत विचारों , चिंतन मनन , आंदोलन एवं नेतृत्व क्षमता से न केवल जगाने का काम किया अपितु प्राकृतिक धरोहर एवं संसाधनों पर आदिवासियों के हक की बात कही हु वे हर हालात में इस देश के मूल निवासियों को जल , जंगल और जमीन का वास्तविक अधिकार दिलाने के पक्ष धर रहे हु उन्होंने लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था का समर्थन करते हुए आदिवासियों के लिए शासन व्यवस्था में भागीदारी को सुनिश्चित करने के प्रयास किए हु उन्होंने अपने त्याग और समर्पण से यह साबित कर दिया कि इस देश के आदिवासी राष्ट्रभक्ति के माध्यम से देश की आन , बान और शान पर किसी प्रकार की कोई आंच नहीं आने देना चाहते हैं हु अतः उनके विचार आज भी अत्यंत महत्वपूर्ण , प्रासंगिक एवं उपयोगी हैं , आवश्यकता केवल उनको अपने आचरण में उतारने की और अपने जीवन में अपनाने की है।

दैनिक नवज्योति

आदिवासी अध्ययन केन्द्र का उद्घाटन समारोह 3 दिसम्बर को

नवज्योति/जोधपुर। व्यास विश्वविद्यालय के कला, शिक्षा एवं समाज विज्ञान संकाय में आदिवासी मुद्दों पर अनुसंधान एवं इससे संबंधित उभरती हुई नूतन प्रवृत्तियों पर अध्ययन के लिए आदिवासी अध्ययन केन्द्र की स्थापना की गई है। आदिवासी अध्ययन केन्द्र के निदेशक डॉ.जनक सिंह मीना ने बताया कि केन्द्र का उद्घाटन 3 दिसम्बर को दोपहर 12 बजे कुलपति प्रो.प्रवीण चन्द्र त्रिवेदी एवं सिंडीकेट सदस्य एवं अधिष्ठाता, कला संकाय प्रो.केएल रैगर द्वारा किया जायेगा। डॉ. मीना ने बताया कि यह केन्द्र उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नवीन कीर्तिमान स्थापित करेगा और देश में आदिवासियों के विभिन्न पहलुओं को समझने एवं नीति निर्माण के लिए संसाधन केन्द्र के रूप में उभरेगा।

दैनिक नवज्योति Jodhpur City - 21 Nov 2021 - Page 4

डॉ.जनक सिंह आदिवासी अध्ययन केन्द्र के निदेशक नियुक्त

नवज्योति/जोधपुर। व्यास विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान के सहायक आचार्य डॉ. जनक सिंह मीना को नवस्थापित आदिवासी अध्ययन केन्द्र का मानद निदेशक नियुक्त किया है। उन्होंने शनिवार को ही पदभार भी संभाल लिया। डॉ.मीना की नियुक्ति अगले आदेश तक जारी रहेगी। डॉ.जनक सिंह मीना अपने कार्यों के साथ आदिवासी अध्ययन केन्द्र के निदेशक पद का कार्यभार भी संभालेंगे। उल्लेखनीय है कि डॉ.मीना के शोध कार्य राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर काफी प्रकाशित हो चुके हैं। वहीं रिसर्च जर्नल्स के संपादक भी हैं। डॉ.मीना की कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। कई राष्ट्रीय अवार्डों से भी नवाजा जा चुका है। डॉ.मीना के पदभार संभालने के बाद शिक्षकों, कर्मचारियों व शोधार्थियों ने फूल मालाएं पहनाकर स्वागत किया। डॉ.मीना ने संबोधन में कहा कि आदिवासी शोध काफी सीमित रहे हैं। अब इस संस्थान के माध्यम से आदिवासियो पर गहन शोध संभव हो पाएगा। आदिवासी परम्पराओं, रीति रिवाजों और अन्य आयामों पर शोध उनकी प्राथमिकता में शुमार रहेगा।

स्वतंत्रता सेनानी गणपतराम ने समर्पित सीमा भावना की अलख जगाई : डॉ. मीणा

दैनिक हिंदुस्तान बोर्डर

जोधपुर। जेएनवीयू के कला, शिक्षा, एवं समाज विज्ञान संकाय के अंतर्गत संचालित आदिवासी अध्ययन केंद्र द्वारा महान स्वतंत्रता सेनानी गणपतराम बगराणिया की 48 वीं पुण्यतिथि पुष्पांजलि अर्पित कर मनाई गई। आदिवासी अध्ययन केंद्र के निदेशक डॉ.जनक सिंह मीणा ने बगराणिया की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर डॉ. जनक सिंह मीणा ने अपने उद्बोधन में कहा कि गणपतराम जी एक क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी के रूप में जाने जाते हैं तथा वे महान समाजसेवी। उन्होंने से ही समाज सेवा को जीवन का लक्ष्य बनाया,1923 में उनको देश निकाला दिया गया और राजद्रोह का मुकदमा चलाया गयाड्ड बगराणिया स्वाभिमानी, साहसी और विद्वान किसान नेता थे।

उनके योगदान को यथोचित स्थान एवं सम्मान मिलना चाहिए। हम ऐसे महापुरुषों का अनुसरण कर उनके बताए हुए रास्तों पर चलेंगे तभी उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस अवसर पर बड़ी संख्या में कला संकाय के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

दैनिक हिन्दुस्तान बॉर्डर

कुलपति ने किया आदिवासी अध्ययन केन्द्र का उद्घाटन

जल,जंगल और जमीन आदिवासियों की अमूल्य धरोहरः प्रो. पी.सी. त्रिवेदी

दैनिक हिंदुस्तान बोर्डर

जोधपुर। जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के कला,शिक्षा एवं समाज विज्ञान संकाय में आदिवासी अध्ययन केन्द्र का उद्घाटन कुलपति प्रो. प्रवीण चन्द्र त्रिवेदी के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ । प्रारंभ में कुलपति द्वारा शिलापट्टिका किया तथा केन्द्र पर फीता काट कर प्रवेश किया। कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती एवं बिरसा मुण्डा की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्जवलित किया गया। आदिवासी अध्ययन केन्द्र के निदेशक डॉ.जनक सिंह मीना ने अतिथियों का स्वागत करते हुए बिरसा मुण्डा, रानी गाइदिन्ल्यू , वीर नारायण सिंह, झलकारी बाई, टंट्या भील, रीतारमण राजू, रामजी गोंड, फूलो, तिलका मांझी आदि के बारे में बताते हुए केन्द्र के उद्देश्यों को प्रस्तुत किया । केन्द्र की भविष्य की योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए डॉ. मीना ने बताया कि यह केन्द्र अन्तर अनुशासनात्मक उपागम पर आधारित होगा तथा इसमें शीघ्र ही प्रमाण पत्र एवं पी जी डिप्लोमा के पाठ्यक्रम तैयार किए जायेगें और यह केन्द्र पूरे देश में संसाधन एवं नीति केन्द्र के रूप में कार्य करेगा जिसके लिए एक पुस्तकालय की स्थापना, एम ओ यू, पुरस्कार एवं सम्मान योजनाएं बनाई जायेंगी। केन्द्र के माध्यम से शीघ्र ही एक शोध पत्रिका शुरू की जायेगी। मुख्य अतिथि उद्बोधन में प्रो. प्रो. प्रवीण चन्द्र त्रिवेदी ने कहा कि आज सरस्वती मां एवं बिरसा मुण्डा के समक्ष जो दीप प्रज्जवलित हुआ है वह दीपक निरन्तर जलता रहे व भाव रूपी दीपक सदैव अपनी रोशनी से देश और समाज का कल्याण करता रहे। कुलपति ने कहा कि 'राइट परसन ऑन राइट प्लेस' पर निदेशक बने हैं और डॉ. जनक सिंह जिस तीव्र गति से काम कर रहे हैं, वे जल्दी ही नए कीर्तिमान हासिल करेंगे ।

प्रो. त्रिवेदी ने कहा कि राजस्थान के आदिवासियों पर शोध अध्ययन करने की आवश्यकता है और गुणात्मक शोध करने होंगे। यह केन्द्र बहुआयामी कार्य करे जिससे विवि को नई पहचान मिल सके तथा पाण्डुलिपियों का संग्रहण कर नये तथ्यों का पता लगाना होगा। उन्होंने कहा कि जो पसंद है उसे हासिल करना सीखलो, जो हासिल है उसे पसंद करलो । यही अवधारणा व्यक्ति एवं संस्था को आगे बढाता है। संकाय अधिष्ठाता प्रो. के एल रैगर ने केन्द्र को संकाय के लिए धरोहर बताते हुए इसके विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला और कहा कि डॉ. जनक सिंह मीना के नेतृत्व में यह केन्द्र अच्छा काम करेगा। राजनीति विज्ञान की विभागाध्यक्ष प्रो. कान्ता कटारिया ने अतिथियों का धन्यबाद किया तथा डॉ. निधि संदल ने मंच का संचालन किया । इस अवसर पर पूर्व संकाय अधिष्ठाता प्रो. के एन उपाध्याय, प्रो. एस पी दुबे, प्रो. पी के शर्मा, प्रो. एस के मीना, पूर्व सिंडीकेट सदस्य प्रो. ए के गर्ग, प्रो. सरोज कौशल,लोक प्रशासन विभागाध्यक्ष प्रो. मीना बरडिया, प्रो. एस एल मीना, प्रो. यादराम मीना, सायंकालीन अध्ययन संस्थान के निदेशक प्रो. के ए गोयल, पत्रकारिता विभागाध्यक्ष डॉ. महिपाल सिंह राठौड, प्रो. पी एम मीना, इतिहास विभागाध्यक्ष सुशीला शक्तावत, बीएसआई के पूर्व निदेशक विनोद मैना, विवि अभियंता विनीत गुप्ता, डॉ. ज्योति गोस्वामी, राजस्थानी विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी बोराणा, गोपनीय शाखा के सहायक कुलसचिव छोटे लाल, विकास खण्ड सहायक कुलसचिव राकेश, लेखराज, हरी सिंह,प्रहलाद सिंह, संभाग अध्यक्ष माया मीना, कर्मचारी संघ के पूर्व अध्यक्ष अनिल , शोधछात्र प्रतिनिधि सवाई सिंह, डॉ. शीतल प्रसाद, डॉ. कुलदीप सिंह डॉ. बबली, डॉ. रकमकेश एनसीसी की छात्राएं एवं अनेक अतिथि उपस्थित रहे।

आदिवासी केंद्र ने स्वतंत्रता सेनानी गणपतराम को दी पुष्पांजलि

जोधपुर. जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय में संचालित आदिवासी अध्ययन केंद्र की ओर से स्वतंत्रता सेनानी गणपतराम बगराणिया की 48 वीं पुण्यतिथि पर मंगलवार को पुष्पांजलि अर्पित की गई। आदिवासी अध्ययन केंद्र के निदेशक डॉ. जनक सिंह मीणा ने अपने उदबोधन में कहा कि गणपतराम स्वतंत्रता सेनानी के साथ समाजसेवी भी थे। वर्ष 1923 में उनको देश निकाला दिया गया और राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। उनके योगदान को यथोचित स्थान एवं सम्मान मिलना चाहिए।

दैनिक नवज्योति Jodhpur City - 05 Dec 2021 - Page

जल, जंगल और जमीन आदिवासियों की अमूल्य धरोहर : प्रो.त्रिवेदी

विवि में आदिवासी केन्द्र का उद्घाटन किया

नवज्योति/जोधपुर।

व्यास विश्वविद्यालय के कला, शिक्षा एवं समाज विज्ञान संकाय में आदिवासी अध्ययन केन्द्र का उद्घाटन कुलपति प्रो. प्रवीण चन्द्र त्रिवेदी के मुख्य आतिथ्य में हुआ ।

कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती एवं बिरसा मुण्डा की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर किया गया। आदिवासी अध्ययन केन्द्र के निदेशक डॉ.जनक सिंह मीना ने अतिथियों का स्वागत करते हुए बिरसा मुण्डा, रानी गाइदिन्ल्यू, वीर नारायण सिंह, झलकारी बाई, टंट्या भील, रीतारमण राजू, रामजी गोंड, फूलो,तिलका मांझी आदि के बारे में बताते हुए केन्द्र के उद्देश्यों को प्रस्तुत किया ।केन्द्र की भविष्य की योजनाओं पर प्रकाश डाला।मुख्य अतिथि उद्बोधन में कुलपति प्रो.त्रिवेदी ने कहा कि राजस्थान के आदिवासियों पर शोध अध्ययन करने की आवश्यकता है। पाण्डुलिपियों का संग्रहण कर नये तथ्यों का पता लगाना होगा। राजनीति विज्ञान की विभागाध्यक्ष प्रो.कान्ता कटारिया ने अतिथियों का आभार जताया।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर पूर्व संकाय अधिष्ठाता प्रो. के एन उपाध्याय, प्रो.एस पी दुबे, प्रो.एस के मीना, पूर्व सिंडीकेट सदस्य प्रो.ए के गर्ग, प्रो. एस एल मीना, प्रो.यादराम मीना, सायंकालीन अध्ययन संस्थान के निदेशक प्रो.के ए गोयल, पत्रकारिता विभागाध्यक्ष डॉ.महिपाल सिंह राठौड,इतिहास विभागाध्यक्ष सुशीला शक्तावत,बीएसआई के पूर्व निदेशक विनोद मैना, विवि अभियंता विनीत गुप्ता, शोधछात्र प्रतिनिधि सवाई सिंह, डॉ.शीतल प्रसाद, डॉ. कुलदीप सिंह व गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

दैनिक नवज्योति Jodhpur City - 05 Dec 2

37 वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन 11 दिसम्बर से

जोधपुर। भारतीय दलित साहित्य अकादमी का राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन पंचशील आश्रम, झड़ौदा गांव बुराड़ी बाईपास, बाहरी रिंग रोड दिल्ली में दिनांक 11-12 दिसम्बर को आयोजित होगा। अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर ने बताया कि इस विशाल दलित सम्मेलन में इंग्लैण्ड, चीन, जापान, नेपाल, पाकिस्तान, इत्यादि कई देशों के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया है। अकादमी के प्रदेशाध्यक्ष आत्माराम उपाध्याय ने बताया कि इस सम्मेलन में समाज सेवी, पत्रकार, साहित्यकार, खिलाड़ियों एवं लेखकों को विभिन्न कलाओं में उत्कर्ष सेवा प्रदान करने वाले को अतिविशिष्ठ सेवा पुरस्कार से व भारत के विभिन्न राज्यों के 10 पुरस्कार डॉ. अम्बेडकर नेशनल अवार्ड दिये जायेंगे। राजस्थान से नेशनल अवार्ड व्यास विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. जानकीलाल मीणा को दिया जायेगा।

दैनिक नवज्योति Matsyanchal - 04 Jan 2022 - Page 10

आदिवासी केंद्र में धूमधाम से मनाई सावित्री बाई फुले और डॉ. मुंडा की जयंती

न्यूज सर्विस/नवज्योति, करौली। जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के कला, शिक्षा एवं समाज विज्ञान संकाय में संचालित आदिवासी अध्ययन केंद्र के तत्वाधान में संविधान सभा के सदस्य रहे आदिवासी डॉ. मुंडा तथा भारत की पहली शिक्षिका सावित्री बाई फुले की जयंती एक साथ मनाई गई । कार्यक्रम में सावित्रीबाई फुले और डॉ. मुंडा की प्रतिमा पर अतिथियों द्वारा माल्यार्पण करप्रारंभ किया गया प् आदिवासी अध्ययन केंद्र के निदेशक डॉण् जनक सिंह मीणा द्वारा शब्द सुमनो से अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम

की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि इन दोनों ही महान शख्सियतों ने अपने अपने तरीके से देश के लिए त्याग और समर्पण किया । इन्होंने विपरीत परिस्थितियों में दृढ़ इच्छाशक्ति एवं साहस का परिचय देते हुए दलित, दमित, आदिवासी, वंचित वर्ग एवं स्त्रियों के उत्थान के लिए अविस्मरणीय योगदान किया। इनके विचारों को हमें अपने जीवन में आत्मसात करना होगा तभी हम इनके कार्यों को आगे बढ़ाते हुए देश हित में काम कर सकेंगे। मुख्य अतिथि उद्बोधन में सिंडिकेट सदस्य एवं संकायअधिष्ठाता प्रो. किशोरी लाल रेगर ने कहा कि डॉ. जयपाल मुंडा का संघर्ष नैसर्गिकता को बचाने के लिए था तथा आदिवासी को जानने के लिएएंथ्रोपोलॉजी का अध्ययन करना अत्यावश्यक है। इन दोनों ही महान विभूतियों का चिंतन शोषित, दलित, वंचित एवं पीड़ितों को ऊपर उठाने का रहा है और हमारा कर्तव्य है कि हम उनकी दृष्टि को व्यवहारिकता में अपनाएं। उन्होंने सावित्री बाई फूले को महिला सशक्तिकरण की मूर्ति बताया । मुख्य वक्ता के रूप में राजनीति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. कांता कटारिया ने अपने उद्बोधन में सावित्रीबाई फुले को विपरीत परिस्थितियों में भी अदम्य साहसी बताते हुए कहा कि उनका आंदोलनों में क्रांतिकारी भूमिका रही है और उन्होंने सामाजिक क्रांति पैदा की फुले भारत की ऐसी महिला थी जो सर्वप्रथम सार्वजनिक जीवन में आई और पहली शिक्षिका की भूमिका भी उन्होंने निभाई।

...ना माथुर, वंदिता जैन और सहयोग रहा।

स्वतंत्रता सेनानी गणपतराम ने समर्पित सेवा भावना की अलख जगाई : डॉ.मीणा

नवज्योति/जोधपुर। व्यास विश्वविद्यालयके कला, शिक्षा एवं समाज विज्ञान संकाय के अंतर्गत संचालित आदिवासी अध्ययन केंद्र द्वारा महान स्वतंत्रता सेनानी गणपतराम बगराणिया की 48 वीं पुण्यतिथि पर पुष्पांजलि अर्पित कर मनाई गई। आदिवासी अध्ययन केंद्र के निदेशक डॉ.जनक सिंह मीणा ने बगराणिया की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम प्रारंभ किया। इस अवसर पर डॉ. मीणा ने अपने उद्बोधन में

कहा कि गणपतराम एक क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी के रूप में जाने जाते हैं तथा वे महान समाजसेवी है तथा समाज सेवा को जीवन का लक्ष्य बनाया।

1923 में उनको देश निकाला दिया गया और राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। बागर राणिया स्वाभिमानी, साहसी और विद्वान किसान नेता थे। उनके योगदान को यथोचित स्थान एवं सम्मान मिलना चाहिए। इस मौके पर काफी संख्या में शिक्षक, कर्मचारी, शोधार्थी और विद्यार्थी उपस्थित थे।

आदिवासी केंद्र में धूमधाम से मनाई फुले एवं मुंडा जयंती

जोधपुर (करौली क्रोनिकल)। जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के कला, शिक्षा एवं समाज विज्ञान संकाय में संचालित आदिवासी अध्ययन केंद्र के तत्वाधान में संविधान सभा के सदस्य रहे आदिवासी डॉ. जयपाल मुंडा तथा भारत की पहली शिक्षिका सावित्रीबाई फुले की जयंती एक साथ मनाई गई। कार्यक्रम में सावित्रीबाई फुले और डॉ. जयपाल मुंडा की प्रतिमा पर अतिथियों द्वारा माल्यार्पण करप्रारंभ किया गया। आदिवासी अध्ययन केंद्र के निदेशक डॉ. जनक सिंह मीणा द्वारा शब्दसुमनो से अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि इन दोनों ही महान शख्सियतों ने अपने अपने तरीके से देश के लिए त्याग और समर्पण किया। इन्होंने विपरीत परिस्थितियों में दृढ़ इच्छाशक्ति एवं साहस का परिचय देते हुए दलित, दमित, आदिवासी, वंचित वर्ग एवं स्त्रियों के उत्थान के लिए अविस्मरणीय योगदान किया इनके विचारों को हमें अपने जीवन में आत्मसात करना होगा तभी हम इनके कार्यों को आगे बढ़ाते हुए देश हित में काम कर सकेंगे। मुख्य अतिथि उद्बोधन में सिंडिकेट सदस्य एवं संकायअधिष्ठाता प्रो. किशोरी लाल रेगर ने कहा कि डॉ. जयपाल मुंडा का संघर्ष नैसर्गिकता को बचाने के लिए था तथा आदिवासी को जानने के लिए एंथ्रोपोलॉजी का अध्ययन करना अत्यावश्यक है। इन दोनों ही महान विभूतियों का चिंतन शोषित, दलित, वंचित एवं पीड़ितों को ऊपर उठाने का रहा है और हमारा कर्तव्य है कि हम उनकी दृष्टि को व्यवहारिकता में अपनाएं। वही मां सावित्री बाई फूले को महिला सशक्तिकरण की मूर्ति बताया। मुख्य वक्ता के रूप में राजनीति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. कांता कटारिया ने अपने उद्बोधन में सावित्रीबाई फुले को विपरीत परिस्थितियों में भी अदम्य साहसी बताते हुए कहा कि उनका आंदोलनों में क्रांतिकारी भूमिका रही है और उन्होंने सामाजिक क्रांति पैदा की। फुले भारत की ऐसी महिला थी जो सर्वप्रथम सार्वजनिक जीवन में आई और पहली शिक्षिका की भूमिका भी उन्होंने निभाई। प्रोफ़ेसर कटारिया ने बताया कि फुले को बाधाएं एवं विपरीत परिस्थितियां आगे की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करती थी और वह मानती थी कि जब तक शिक्षा नहीं है तब तक ज्ञान नहीं आ सकता साथ ही सावित्रीबाई ने बाल हत्या प्रतिबंधक गृह की स्थापना भी की और 1873 में सत्यशोधक समाज विस्थापित कर महिला सशक्तिकरण

की दिशा में मिसाल कायम की। इस अवसर पर प्रो. यादराम मीणा, डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. दिनेश गहलोत, हनुमान मीणा, डॉ. शीतल प्रसाद मीणा, डॉ विजय श्री, सी एस मीणा, विनोद मैना, राजेश कुमार, भीम सिंह, सुल्तान सिंह आदि दानदाताओं ने आदिवासी अध्ययन केंद्र के लिए आवश्यक वस्तुएं भेंट कर हर संभव मदद का आश्वासन दिलाया इस अवसर पर संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. मंगलाराम, लोक प्रशासन विभाग अध्यक्ष प्रो. मीना बरडिया, प्रो. राजेंद्र परिहार, ललित कला विभाग अध्यक्ष डॉ रेनू शर्मा, डॉ रश्मि मीणा, डॉ सुमनलता, डॉ. फत्ताराम, डॉ भरत देवड़ा, डॉ अश्विनी, डॉ प्रवीण चंद, डॉ.रामगोपाल, रकमकेस, रेणुका, राखी बोराणा एवं बड़ी संख्या में शोधार्थी और विद्यार्थी उपस्थित रहे। मंच का संचालन डॉ कुलदीप सिंह मीणा ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ भरत देवड़ा ने किया।

4 जनवरी को यहां होंगे प्रशासन गांव के संग अभियान शिविर

करौली (करौली क्रोनिकल)। जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट सिद्धार्थ सिहाग ने बताया कि 2 अक्टूबर 2021 से प्रशासन गांव के संग अभियान प्रारंभ किये गये लेकिन जिले मे पंचायत आम चुनाव 2021 आयोजित होने के कारण उक्त अभियान स्थगित कर दिये गये थे। उन्होने बताया कि पंचायत आम चुनाव 2021 सम्पन्न हो जाने के कारण शेष रही ग्राम पंचायतों में प्रशासन गावों के संग अभियान के तहत। 4 जनवरी को पंचायत समिति करौली की ग्राम पंचायत बीजलपुर मे, पंचायत समिति मासलपुर की कोटा छबर में, सपोटरा की अमरगढ में, पंचायत समिति मंडरायल की श्यामपुर मे एवं पंचायत समिति टोडाभीम की मांचडी में, नादौती की कैमा में, हिण्डौन की चंदीला में शिविर आयोजित किये जायेंगे।

GPS Map Camera
Jodhpur, RJ, India
Jai Narain Vyas University, Jodhpur,
Lat 26.240383, Long 73.017072
01/06/2022 11:51 AM
Maps

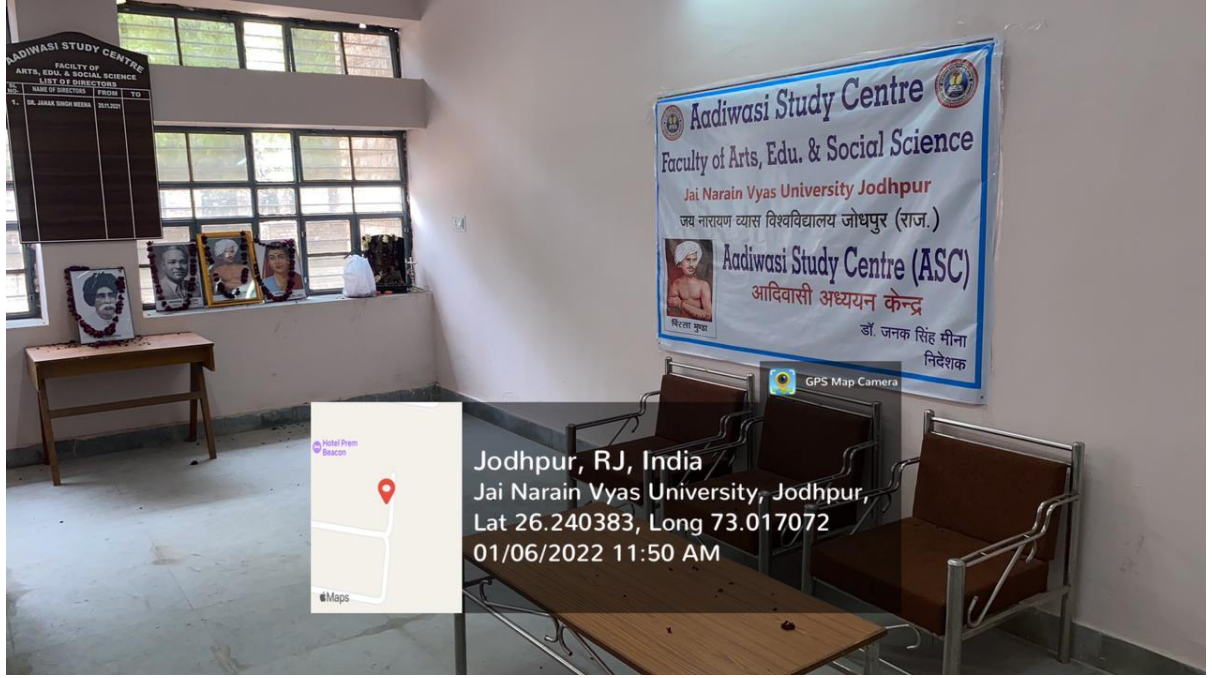
AADIWASI STUDY CENTRE
FACULTY OF
ARTS, EDU. & SOCIAL SCIENCE
LIST OF DIRECTORS
Aadiwasi Study Centre
Faculty of Arts, Edu. & Social Science
Jai Narain Vyas University Jodhpur
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर (राज.)
Aadiwasi Study Centre (ASC)
आदिवासी अध्ययन केन्द्र
डॉ. जनक सिंह मीना
निदेशक
GPS Map Camera
Jodhpur, RJ, India
Jai Narain Vyas University, Jodhpur,
Lat 26.240383, Long 73.017072
01/06/2022 11:50 AM
Maps

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर
कला, शिक्षा एवं समाज विज्ञान संकाय परिसर में
आदिवासी अध्ययन केन्द्र का
लोकार्पण
प्रोफेसर (डॉ.) प्रवीण चन्द्र त्रिवेदी
माननीय कुलपति, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर
के कर कमलों द्वारा
शुक्रवार दिनांक 03 दिसम्बर, 2021
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष, चतुर्दशी विक्रम संवत् 2078 को सम्पन्न हुआ।
डॉ. जनक सिंह मीना
निदेशक
आदिवासी अध्ययन केन्द्र
प्रो.(डॉ.) किशोरी लाल रैगर
सिंडीकेट सदस्य व अधिष्ठाता
कला, शिक्षा एवं समाज विज्ञान संकाय

Aadiwasi Study Centre